

— घ्रा 1) *hochen auf*: घ्रा यत्ते घोषानुत्तरा युगानि RV. 3,33,8. इनामा-
घोषवत्समा सहरति याक्ष्वाङ् 10,89,16. — 2) *sich hören lassen*: घ्रास्यं
अत्रस्याद्वय घ्रा च घोषान् RV. 5,37,3. — 3) *laut ausrufen, verkünden*:
देवेष्वा घोषतम् VS. 5,17. वर्किर्वा यत्स्वपत्याय वृष्यते ऽर्को वा श्लोकमा-
घोषते दिवि RV. 1,83,6. स्तवानावृत्तमा घोषयो वृक्ष 151,4. — caus.
Geräusch machen, laut sein: नरो यत्र उक्ते काम्यं मधोघोषयन्तो अभितो
मिवस्तुरः RV. 10,76,6. ertönen machen: (घ्रावाणाः) घ्राघोषयन्तः पाण्डि-
मुपदिभिः 94,4. *laut verkünden*: घ्राघोषितं च नगरे न पतव्या मुरति वै
MBh. 3,647. *laut verkünden lassen* BHATT. 3,2. *beständig klagen* Vop.
in Dhātup. 33,54. — Vgl. घ्राघोष fg.

— व्या *laut ertönen*: व्याघुष्टतलनाद् MBh. 12,3637. — caus. *laut ausrufen* HARIV. 10342.

— उद् *ertönen*: उद्घुष्टनयश्च विरायिताशा VARAH. BRH. S. 19,17. *auf-
schreten*: उद्घोषादिः खैर्यवैः कलहद्भिः परस्परम् MBh. 12,5349.
mit Geschrei erfüllen: विरुगोदुष्टे — काननोत्तमे R. 3,79,45. उद्घुष्ट n.
Geräusch, Getöse: नूपुरोदुष्ट 2,60,19. तूर्योदुष्टनिनादित 1,73,36. 77,6.
— caus. *laut ertönen lassen*: पटहान् RĪGĀ-TAR. 3,5. *laut verkünden*:
पुनस्तथैवेद्घोषयतः MBh. 169,8. RĪGĀ-TAR. 2,157. — Vgl. उद्घोष.

— प्रोद् *mit Geräusch erfüllen*: (ऋदिनीम्) प्रोद्घुष्टा क्रौञ्चकुरैः MBh.
3,2512. — caus. *laut verkünden* RĪGĀ-TAR. 1,285.

— उप *mit Geräusch erfüllen*: मत्वावनं तद्विरुगोपघुष्टम् DHAUP. 6,2. मा-
लो मधुव्रतवद्वयगिरापघुष्टम् Bhāg. P. 3,28,28. 8,8,24. — Vgl. उपघोषण.

— निस् s. निर्घोष.

— प्र *ertönen* VARAH. BRH. S. 47,49. — caus. *laut verkünden lassen*
MBh. 12,2645.

— वि *laut ertönen*: इष्टिविघुष्टनादा भू VARAH. BRH. S. 19,6. *laut ver-
künden*: विघुष्य तु कृतं चैरिः M. 8,233. अहो दानं विघुष्टं ते सुमत्स्व-
र्गवासिभिः MBh. 3,15433. *mit Geräusch u. s. w. erfüllen*: तूर्यगीतविघु-
ष्टानि विमानानि R. 3,39,19. कारणवविघुष्टानि तडगानि 12,14. मधु-
व्रतव्रातविघुष्टया — मालया Bhāg. P. 8,18,3.

— उद् *caus. laut verkünden oder — verkünden lassen*: विज्ञपे ज्ञपु-
द्विघोष्य Bhāg. P. 9,24,66.

— सम् *ertönen*: संघुष्टो oder संघुषितो पीढा P. 7,2,28. Sch. तालशब्दं
स तं श्रुत्वा संघुष्टं फलपातने HARIV. 3715. *laut verkünden*: संघुष्टम् oder
संघुषितं वाक्यम् P. 7,2,28. Sch. Vop. 26,113. *ausbieten*: संघुष्ट (von einer
Speise) JĀṬ. 1,168. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen*: द्वित्रसंघुष्टं सरः MBh.
3,10406.11559. R. 2,31,4. 3,33,46. 79,41. 5,17,17. संघुषित n. *Geschrei*
BHATT. 3,35.

— परिस्म *mit Geschrei u. s. w. erfüllen*: निक्कुञ्जान्परिसंघुष्टान् MBh.
3,2406.

2. घृ = घर्ष.

— नि *caus. zertreten, zermalmen*: (ऋयः) येभिर्निर्दस्युं मनुयो निघोषयः
(der Accent wohl nur fehlerhaft) VĀLAKH. 2,8. वधैः शुल्लं निघोषयन् 3,8.

घृय (von 1. घृय्) adj. *tönend, s. अर्घुय*.

घृष्ट n. *Wagen* WILS. — Könnte auf 1. घृम् (*knarren*) zurückgeführt
werden, wenn das Wort sicher stände.

घृष्य (von 1. घृय्) adj. 1) *was einen Ton von sich giebt, s. घोरघृष्य*. —
2) *laut zu verkünden*: नमो घृष्याय घोषाय (शिवाय) MBh. 12,10386.

II. Theil.

घुसण n. *Safran* TRIK. 2,6,36. H. 644. Hār. 103.

घूक m. *Eule* H. 1324.

घूकारि (घूक + अरि) m. *Kröhe (Feind der Eule)* H. 1322.

घूकावास (घूक + आवास) m. N. eines Baumes (s. शाखोटः) RĪGĀ. im
ÇKDr.

घूर, घूर्यते *verletzen; alt werden* Dhātup. 26,46. — Vgl. जूर, जर.

घूर्ण, घूर्णति und घूर्णति *hinundherschwanken, wanken, sich hinund-
herbewegen, zucken* Dhātup. 28,49. 12,5. गुरुभारममाक्रान्तश्चाल च नु-
घूर्ण च R. 4,13,25. सा भूघूर्णति KATHĀS. 22,221. (नौः) घूर्णति चपलेव स्त्री
मता MBh. 3,12789. वातिरितो वृत्त इवात्र घूर्णन् 3,10061. 1,8217. ततो
रथो घूर्णितवान् 8,4711. घूर्णतो ऽपि बलौघस्य 7,1358.932. घूर्णनाक्रान्ते
(तत्तकः) 1,2133. केचित्तत्रैव घूर्णतो गतासव इवाभवन् 10,802. तमपश्य-
न्विषोदामि घूर्णामीव च 16,276. सुरतजागरुघूर्णमान (नेत्र) KĀURAP. 5. वा-
युश्च घूर्णति भूमिः MBh. 3,12084. 12,10311. घूर्णतीव च मे मनः 1,2061.
घूर्णमानकृदय 2060. अघूर्णीषुः BHATT. 15,32. अघूर्णीष्टाम् 118. घूर्णति *sich
hinundherbewegend* AK. 3,1,32. H. 442. मदघूर्णितवक्त्रा KATHĀS. 24,1.
मदघूर्णितनेत्र PRAB. 6,5. Sch. zu ÇĀK. 67. — caus. *sich hinundherbewe-
gen lassen*: भ्रमयति दृशं घूर्णयति च BHATT. 1,88. नयनान्यरूपानि घूर्ण-
यन् — वारुणीमद्ः प्रमदानाम् KUMĀRAS. 4,12. (वृत्ताः) वायुना घूर्णयमानाः
MAHĀNĀṬAKA im ÇKDr.

— अत्र *sich hinundherbewegen*: अत्रघूर्णमानतामदष्टिरपतन् DAÇAK. in
BENF. Chr. 194,12. अत्रघूर्णित *sich hinundherbewegend*: मार्तवेगताडि-
तो वने यथा शाल इवावघूर्णितः MBh. 9,3239.

— आ *hinundherschwanken, sich hinundherbewegen*: घृतमधुमयत्वद-
ऊवचोविषेणाघूर्णती SĀH. D. 34,22. आघूर्णतीवानिलैर्निलैः (अम्बरम्)
MĀKĀ. 83,16. आनुघूर्णः BHATT. 14,77. आघूर्णित *schwankend, sich hin-
undherbewegend*: आघूर्णितो वा वातेन DEV. 12,26. पट्टाघूर्णिततल (so
mit der v. l. zu lesen) MBh. 1,2850. पवनाघूर्णितपादप HARIV. 2605. पु-
ष्पासवाघूर्णितनेत्र KUMĀRAS. 3,38. HARIV. 5428. Bhāg. P. 6,1,59.

— व्या *dass.*: व्याघूर्णनानाश्च सुवर्णमालाः MBh. 7,7301. व्याघूर्णित
sich hinundherbewegend, schwankend: व्याघूर्णित इव हुमः 3,7191. वनं
सर्वतर्वपदं व्याघूर्णितमिवाभवत् 1,5882. आकृतो मूर्ध्नि व्याघूर्णित इव
स्थितः 2,1673.

— परि *dass.*: परिघूर्णामि कृदयं मे विदीर्यते MBh. 1,2089.

— वि *dass.*: विघूर्णत्यो मता इव MBh. 11,522. 5,4049. R. 1,32,18.
2,63,49. (महागिरिः) विघूर्णमानशिखरः MBh. 3,11141. 4,463. 8,4778.
विघूर्णमानयन PRAB. 33,15. वानियेतुः पथक्केचित्तयान्ये विनुघूर्णारे (Kām-
pfer) HARIV. 12347. विघूर्णित *schwankend, sich hinundherbewegend* MBh.
8,2240. R. 5,93,22. KATHĀS. 19,90. PRAB. 16,17. Bhāg. P. 3,19,3. 5,23,5.

घूर्ण (von घूर्ण) 1) adj. f. आ *swankend, sich hinundherbewegend*: घूर्णे रथे
MBh. 8,4712. रूपा घूर्णः Bhāg. P. 7,2,2. गजकुलैर्ऋदिनीव घूर्णा 9,10,17.
मदालसघूर्णनेत्र KĀURAP. 43. ० शिरस् VJUTP. 204. — 2) m. eine best. Ge-
müsepflanze (घ्रीष्ममुन्दरक) ÇANDAK. im ÇKDr.

घूर्णन (wie eben) n. *das Schwanken* H. 1519. मौलि ० Gīt. 9,11. घूर्णा-
ना f. *dass.*: (मोक्तः) घूर्णनागात्रपतनभ्रमणादर्शनादिकृत् SĀH. D. 177.

घूर्णी (wie eben) f. *dass.* H. 1519.

घूर्णीका (von घूर्णी) f. N. pr. eines Frauenzimmers MBh. 1,3302. fg.

घृङ् (onomatop.) *kling!* ÇAT. Br. 14,1,2. 10.